RNI No. : DELBIL/2005/15122

D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21

# विद्याभारती संकुल संवाद

मासिक पत्रिका

E-mail : vbsankulsamvad@gmail.com

वर्ष-15 | अंक 4 | मार्च 2019 | विक्रमी सं. 2075 | मूल्य : एक रुपया

## विद्या भारती की साधारण सभा की बैठक सम्पन्न

### सभी प्रांतों से पधारे शिक्षाविदों ने किया शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर मंथन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की साधारण सभा की बैठक हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिला में गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर में (दिनांक 15 से 17 मार्च 2019) सम्पन्न हुई। इस सभा का प्रारंभ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबले, विद्या भारती के संरक्षक पद्मश्री ब्रह्मदेव शर्मा (भाई जी) एवं डॉ. गोविन्द जी शर्मा (अध्यक्ष) ने संयुक्त रूप से माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया।

सभा के प्रारंभ में विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी ने समाज सेवा को सर्वोपरि रखने वाले कार्यकर्ता, प्राकृतिक आपदाओं में जान गवाँने वाले नागरिक एवं देश की रक्षा में शहीद हुए सैनिकों की दिवंगत आत्मा की शांति हेतु श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने गत वर्ष का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि देशभर में विद्या भारती के अंतर्गत 13,067 विद्यालय, 4,545 एकल विद्यालय एवं 5,149 संस्कार केन्द्र चल रहे हैं। विद्या भारती का कार्य देश के 705 में से 623 जिलों में चल रहा है। संस्थान के राष्ट्रीय महामंत्री ने बताया कि भारतीय संस्कारों से सम्पन्न विद्यार्थी युगानुकूल आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर भारत के विचार सम्पन्न जागरुक नागरिक की भूमिका का भली-भाँति निर्वहन कर सके, ऐसा विद्या भारती का सतत् प्रयास रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार पर बल देते हुए कहा कि खेल, गणित एवं विज्ञान से संबंधित विविध विषयों पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है ताकि वे विभिन्न स्तरों पर होने वाली प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का अतुलनीय परिचय दे सकें।

प्रारंभिक सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में विद्या भारती के सह संगठन मंत्री मा. यतीन्द्र शर्मा ने कहा कि साधारण सभा हमारे अपने लक्ष्यों की समीक्षा व आगामी योजना की बैठक है, जिसमें त्रिवर्षीय योजना बनाकर प्रत्येक वर्ष का लक्ष्य तय कर सभी कार्यों को चरणबद्ध तरीके से करने की प्रक्रिया निर्धारित होती है। सभा में तटीय क्षेत्रों, संवेदनशील क्षेत्रों, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक चुनौतियों को चिह्नित करके विस्तार एवं विकास की योजनाएँ बनाई। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रम किया जाए, जिसमें छात्रों के साथ-साथ समाज के लोगों को भी शामिल किया जा सके। आधारभूत विषयों के माध्यम से आचार्यों के द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल देने वाली विषयों की प्रभावी परिषदें, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अलग-अलग टीमों के निर्माण की योजना बनाकर सशक्त कार्यकर्ता तैयार करें, ताकि वैचारिक क्रांति लाकर विभन्न क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार शैक्षिक एवं सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाया जा सके।

सभा के दूसरे दिन उपस्थित प्रतिनिधियों द्वारा सम्बंधित प्रांत में सम्पन्न हुए विशेष कार्यक्रम- शिक्षाविद् सम्मेलन, क्रियाशोध, पूर्वछात्र परिषद्, अभिभावक प्रशिक्षण, वैदिक गणित, कृषि विज्ञान केन्द्र, जनजाति ग्राम दर्शन, समर्थ शिशु श्रीराम कथा एवं माता-पुत्री सम्मेलन आदि के प्रयोग एवं उपलब्धियों पर चर्चा हुई। इसके साथ-साथ गणित विज्ञान मेला, संस्कृति महोत्सव, अखिल भारतीय खेल-कूद, जिलाकेन्द्रों का सशक्तिकरण, पोषक ग्राम संपर्क योजना एवं कौशल विकास पर विमर्श करते हुए इनकी गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सुझाव रखे गए। संगठन की रूपरेखा, नीति निर्धारण, राष्ट्रीय एवं वैश्विक शिक्षा के विषयों पर मंथन हुआ। संस्कृति शिक्षा संस्थान की 09 पुस्तकों का विमोचन किया गया, जिनमें से 05 पुस्तकें बाल साहित्य पर एवं 04 पुस्तकें शैक्षिक चिन्तन पर आधारित हैं। सभा में इस बात पर जोर दिया गया कि विद्या भारती का काम मात्र विद्यालय चलाना ही नहीं है अपितु शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी भूमिका रखते हुए भारतीयता के विचार को स्थापित करना है। विद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता के विकास की दृष्टि से मानक परिषद् द्वारा विद्यालयों का मूल्यांकन, किशोर आयु वर्ग की बालिकाओं के व्यक्तित्त्व विकास के लिए माता-पुत्री सम्मेलन, देश की वर्तमान परिस्थितियों में

शिक्षा क्षेत्र के परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए आगामी तीन वर्ष की योजना बनाने पर बल दिया गया।

विद्या भारती के अध्यक्ष डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा ने संस्थान की मोबाईल एप. का लोकार्पण करते हुए अपने नौ वर्षों के कार्यकाल के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि शिक्षा जगत में जब कभी कोई शिक्षा के बारे में लिखेगा तो वो लेख विद्या भारती के शिक्षा संबंधी विचारों का समावेश करके ही पूर्ण होगा। तत्पश्चात् डॉ. मधुश्री साव जी ने काउंसिलिंग विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि छात्रों के मस्तिष्क में भावनाओं का सृजन करते हुए उनका विकास करना एक शास्त्र है। छात्रों के जीवन को सफल बनाने हेतु शिक्षण की प्रक्रिया 80 प्रतिशत भावनाओं तथा 20 प्रतिशत बुद्धिमता पर आधारित हो।

नए अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. रामकृष्णराव ने अपने उद्बोधन में कहा कि सीखना, सिखाना जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। आचार्यों को दक्ष करते हुए ग्लोबल ट्रेंड्स को अपनाकर, मूलभूत विषयों पर बल देते हुए अपना लक्ष्य निर्धारित करें, जिससे युवाओं में बढ़ते आक्रोश को कम किया जा सके। छात्रों को जीवनमूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करते हुए उनका कौशल विकास करें ताकि वो समाज के सामने अपना आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

सभा के समापन के अवसर पर मा. दत्तात्रेय जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान समाज के बीच, समाज के सहयोग से एवं समाज के लिए कार्य करने वाली संस्था है। शिक्षा पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी स्तरों पर चिंतन करते हुए अध्ययन व शोध के कार्यों पर बल देकर नए ज्ञान का सृजन करके पुरानी परम्पराओं से जोड़कर नई पीढ़ी में स्थानांतरित करना ही हमारा लक्ष्य हो। राष्ट्र का नव निर्माण करने के लिए छात्रों में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत करें।

विभिन्न चर्चा सत्रों में संगठन मंत्री श्री जे.एम. काशीपति, महामंत्री श्री ललित बिहारी गोस्वामी, अध्यक्ष डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, उपाध्यक्ष श्री दिलीप बेतकेकर, मंत्री श्री शिवकुमार जी, श्री अवनीश भटनागर जी, श्री श्रीराम आरावकर जी, डॉ. रमा मिश्रा आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस सभा के अंतिम चरण में आगामी तीन वर्षों की बजट रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया। वंदे मातरम् के साथ सभा का समापन किया गया।

# शिक्षण अधिगम सामग्री - एक व्यापक दृष्टि

## TLM (Teaching Learning Material)

स्कूल शिक्षा की वर्तमान शब्दावली में टी.एल एम. बहुत प्रचलित शब्द है। विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षणों में भी टी.एल.एम. के निर्माण व कक्षा में इसके उपयोग पर काफी चर्चा की जाती है। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे ज्यादा से ज्यादा रचनात्मक होकर टी.एल.एम. बनाएँ और उन्हें साझा करें। इसके परिणाम स्वरूप यह देखा गया है कि शिक्षकों द्वारा अधिक चमकीले व सजावटी टी.एल.एम. तैयार किए जाते हैं।

TLM (Teaching Learning Material) क्या है ?

- TLM की परिधि में विभिन्न तरह की सामग्री शामिल है जो सीखने सिखाने को सुगम बनाती है।
- अक्सर टीचिंग एड, लर्निंग एड व टी.एल.एम. में भेद किया जाता है।
- टीचिंग एड को हम शिक्षक के नजरिये से देखते हैं।
- लर्निंग एड को हम सीखने वाले के नजरिये से देखते हैं।
- TLM सीखने और सिखाने, दोनों को सुगम बनाने का एक माध्यम है।
- TLM के निर्माण या उपयोग में विद्यार्थी का नजरिया अहम होना चाहिए, न कि शिक्षक की सोच का विद्यार्थी पर थोपा जाना।

**TLM (Teaching Learning Material) का तात्पर्य या समझ-**

- टीचिंग लर्निंग मैटेरियल या टी.एल.एम. वह सामग्री है जो बच्चों की किसी विषय-वस्तु की अवधारणा को स्पष्ट करने में मदद करती है।
- जब हम कहते हैं कि टी.एल.एम. बच्चों को सीखने में मदद कर रहा है तो वास्तव में, हम बच्चों के सीखने को देख कैसे रहे हैं? जब हम इस बात को समझेंगे, तब ही हम एक अच्छा टी.एल.एम. या तो तैयार कर पाएँगे या ढूँढ़कर कक्षा में उसका उपयोग कर पाएँगे।
- अगर हम बच्चों के याद करने या दोहराने को सीखना मानेंगे तो जाहिर है कि हम टी.एल.एम. को भी केवल जानकारी देने की सामग्री ही मानेंगे और कक्षा में उसका उपयोग भी उसी तरह करेंगे।
- किसी भी अच्छे और उपयोगी टी.एल.एम. निर्माण के लिए उससे सम्बन्धित विषय एवं उससे पूरे किए जाने वाले उद्देश्य की जानकारी होना आवश्यक है।

जैसे - अगर हमें बच्चों में गिनती की अवधारणा पर समझ बनानी है तो उसके टी.एल.एम. को गिनती की समझ बनाने के सन्दर्भ में ही देखना होगा, न कि गिनती को याद करने के सन्दर्भ में।

- इसके साथ यह भी समझना आवश्यक है कि बच्चों को गणित पढ़ाने में किन बातों पर ध्यान रखने की जरूरत है और विज्ञान सीखने में किन चीजों की व सामाजिक अध्ययन में अवधारणाएँ किस तरह स्पष्ट की जाती है।
- भाषा सीखने का क्या मतलब है व इसमें बच्चों को किस तरह के अवसर देने की जरूरत है? इन्हीं सब बिन्दुओं के इर्द-गिर्द ही टी.एल.एम. का निर्माण या प्रयोग किया जाना चाहिए।
- जब किसी गतिविधि को कक्षा में करने की बात सोची जाए तो इस बात की योजना बनाई जानी चाहिए कि उसके द्वारा क्या प्राप्त किया जाएगा व उसका उपयोग किस प्रकार किया जाएगा?

**TLM (Teaching Learning Material) निर्माण - अवधारणा**

- आसान टी.एल.एम. - एक प्राथमिक टी.एल.एम., जैसे कि एक चार्ट में किसी भी जानकारी को सरल व

व्यवस्थित तरीके से कक्षा में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी तरह एक पोस्टर विद्यार्थी को तुरन्त कोई सन्देश देने या उसे भावनात्मक ढंग से प्रभावित करने में सक्षम होता है।

- जटिल टी.एल.एम.- जटिल टी.एल.एम. कोई मॉडल या रचनात्मक तरीके से बनाया गया कोई प्रयोग हो सकता है, जो विद्यार्थियों को किसी विषय-विशेष से जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं व तथ्यों के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में मदद कर सके।
- यहाँ पर यह समझने की आवश्यकता है कि सीखने की हर प्रक्रिया में हमेशा उच्च स्तरीय कौशलों की जरूरत नहीं पड़ती। कुछ कार्यों के लिए विद्यार्थियों द्वारा केवल आवश्यक व अर्थपूर्ण जानकारी प्राप्त करना ही पर्याप्त हो सकता है।
- आप किस विषय में किस तरह की अवधारणाएँ बच्चों को सिखाना चाह रहे हैं, सीखने का सन्दर्भ क्या है, और बनाई जाने वाली सामग्री बच्चों के विकासात्मक स्तर के लिए क्या उचित है या नहीं? इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही टी.एल.एम. का निर्माण करना चाहिए।
- कभी कभी अपने आस-पास के चुने गए कंकड़, पत्तियाँ, फूल या पास के किसी म्यूजियम, पार्क, जंगल या सब्जी-मण्डी का भ्रमण भी टी.एल.एम. के दायरे में आ सकता है।
- कक्षा में टी.एल.एम. किसी विशेष अवसर को ध्यान में रखकर भी निर्मित किए जा सकते हैं, जैसे - कक्षा में कुछ दिखाना हो या प्रदर्शित करना हो।
- फिल्म भी एक प्रभावी टी.एल.एम. है। इसके माध्यम से बच्चे उन जगहों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जहाँ जाना उनके लिए सम्भव ही न हो।

**अच्छे टी.एल.एम. की विशेषताएँ-**

1. एक चार्ट को लें तो उसमें यह देखने की आवश्यकता होती है कि उसकी विषय-वस्तु या ग्राफ को ठीक से देखा जा सकता है या नहीं।
2. किसी ऑडियो कार्यक्रम में आवाज की स्पष्टता।
3. फिल्म में विजुअल व ऑडियो, दोनों की स्पष्टता।
4. नक्शों और ग्लोब में उचित तकनीक का प्रयोग आदि।

**टी.एल.एम. की व्यापकता एवं स्पष्टता-**

- टी.एल.एम. की व्यापकता के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सामग्री शामिल की जा सकती है। इसमें छपी हुई सामग्री से लेकर स्वयं की बनाई हुई वस्तुएँ, स्थानीय रूप से उपलब्ध वस्तुएँ, विभिन्न इन्द्रियों के उपयोग का ध्यान में रखकर तैयार की गई वस्तुएँ, यहाँ तक कि कक्षा का एक कोना या स्कूल का एक हिस्सा भी हो सकता है।
- टी.एल.एम. की स्पष्टता- टी.एल.एम. के निर्माण व उसके प्रयोग में सबसे आवश्यक है, शिक्षक की स्पष्टता।

1. उस उद्देश्य के बारे में जिसके लिए या तो वह स्वयं टी.एल.एम. बना रहा हो या पहले से उपलब्ध टी.एल.एम. का कक्षा में प्रयोग कर रहा हो।
2. विद्यार्थी उस टी.एल.एम. से मानसिक रूप से कैसे जुड़ेंगे।
3. उन गतिविधियों के बारे में जो उस टी.एल.एम. के इर्द-गिर्द करवाई जाएगी। क्योंकि यह जरूरी नहीं कि हर टी.एल.एम. का हर विद्यार्थी अपने हाथों से ही प्रयोग करे, लेकिन जरूरी है कि वह उससे मानसिक रूप से जुड़कर अपनी समझ को समृद्ध बनाए।
4. टी.एल.एम. को सजावटी सामान के रूप में प्रदर्शित न किया जाए।
5. किसी भी टी.एल.एम. का, चाहे वह कितना भी अच्छा व प्रभावी क्यों न हो, एक निश्चित जीवनकाल होता है जो कुछ मिनट, कुछ दिनों या कुछ महीनों का हो सकता है। इसलिए टी.एल.एम. के खराब हो जाने के डर को उसके उपयोग पर हावी नहीं होना चाहिए।

**देवकीनन्दन चौरसिया,**
सदस्य अ.भा. प्रशिक्षण टोली मध्यक्षेत्र, भोपाल।

# डाक विभाग ने जारी किया गीता निकेतन आवासीय विद्यालय का विशेष डाक लिफाफा

शिक्षा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन नए-नए कीर्तिमान स्थापित करने वाले गीता निकेतन आवासीय विद्यालय के इतिहास में एक नया अध्याय और जुड़ा है। विद्या भारती द्वारा संचालित इस विद्यालय में देश के लगभग 22 राज्यों से 1800 विद्यार्थी संस्कारयुक्त शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय की ओर से बड़ी मात्रा में डाक विभाग के द्वारा अनेक कार्य संपादित किए जाते हैं। डाक विभाग हरियाणा ने विद्यालय की इस बढ़ती लोकप्रियता से प्रभावित होकर विद्यालय के नाम से एक विशेष डाक कवर (लिफाफा) जारी किया है।

विविध रंगों से सुसज्जित एवं विद्यालय का गौरवमय संक्षिप्त परिचय देने वाले इस विशेष कवर का अनावरण चीफ पोस्ट मास्टर जनरल (हरियाणा) श्रीमती रंजू प्रसाद जी के द्वारा किया गया। श्रीमती रंजू प्रसाद ने गीता निकेतन आवसीय विद्यालय में आयोजित दो दिवसीय (28 व 29 नवंबर 2018) जिला स्तर पर डाक टिकट प्रदर्शनी के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि यह विद्यालय अनुशासन और संस्कारों के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। गीता निकेतन आवासीय विद्यालय के लिए विशेष डाक कवर प्रकाशित करना डाक विभाग के लिए भी सौभाग्य का विषय है। आशा है इस डाक कवर से निश्चित ही विद्यायल को एक और नई पहचान मिलेगी। इस अवसर पर विद्या भारती संस्कृति संस्थान के निदेशक डॉ. रामेन्द्र सिंह, विद्यालय के प्रबंधक श्री राजेन्द्र सिंह कलेर, प्राचार्य श्री नारायण सिंह सहित विद्यालय परिवार के सभी सदस्यगण उपस्थित रहे।

# सर्वहितकारी शिक्षा समिति की प्रांतीय वार्षिक योजना बैठक सम्पन्न

सर्वहितकारी शिक्षा समिति की वार्षिक योजना बनाने हेतु विद्याधाम, जालंधर में (09 एवं 10 फरवरी को) एक बैठक आरंभ हुई। इस दो दिवसीय बैठक में विभिन्न विषयों पर गहनता से विचार-विमर्श हुआ। बैठक में शैक्षणिक कार्यों के साथ-साथ विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना व संस्कार किस प्रकार उत्पन्न किए जा सकते हैं, इस सम्बन्ध में विस्तार से योजना बनाई गई। आठ सत्रों की इस बैठक में अपने राष्ट्रीय एवं धार्मिक पर्वों को मनाने का भी प्रावधान किया गया।

बैठक के वक्ता में श्री हर्षकुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यहाँ की विशेषता है कि पहले बालकों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर अनेक प्रयोग किए जाते हैं। इन प्रयोगों को अन्य स्थानों पर दोहराया जाता है। बार-बार के इन प्रयोगों के निष्कर्षों और परिणामों के आधार पर नीतियाँ बनाई जाती है। शैक्षिक योजना बनाते समय समस्त शैक्षिक परिवेश का ध्यान रखना होगा। विद्या भारती का प्रारंभ से ही यह उद्‌देश्य रहा है 'बालकों का सर्वांगीण विकास'। इस उद्‌देश्य को प्राप्त करने के लिए अध्यापकों का उचित प्रशिक्षण होना आवश्यक है, जिससे वह एक ऐसे बालक का निर्माण कर सके जो कि देश व समाज की वर्तमान चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम हो सके। अध्ययन व अध्यापन का कार्य परीक्षा में अधिकतम अंक लाने तक ही सीमित न हो। शिक्षा का उद्‌देश्य तो वास्तविक अर्थों में मानव को मानव बनाने का है। इस बैठक में कुल 45 सहभागी उपस्थित रहे।

# प्रारम्भिक शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

प्रारम्भिक शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 3 एवं 4 फरवरी 2019 को सूरत (गुजरात) के जी.जी. झडफिया विद्यालय, वराछा में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के राष्ट्रीय प्रमुख श्री श्रीराम जी आरावकर ने गोष्ठी का उद्‌घाटन माता वागीश्वरी के समक्ष दीप-प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन कर किया।

संगोष्ठी में मूल रूप से जिन 08 बिन्दुओं पर चर्चा हुई, वे निम्नवत हैं-

1. पुस्तकों की समीक्षा, आवश्यक/अनावश्यक विषय, एन.सी.एफ. का ध्यान, बस्ते का बोझ कम करना।
2. भाषा (हिन्दी, अँग्रेजी, संस्कृत) शिक्षण की समस्याएँ व समाधान।
3. शिक्षण व्यवहारिक कैसे हो?
4. आचार्य प्रशिक्षण एवं उनके अनुवर्ती प्रयास व मूल्यांकन।
5. सहायक सामग्री का निर्माण व प्रयोग में आने वाली कठिनाइयाँ।
6. बाल मनोविज्ञान व शिक्षण में जीवन मूल्यों की प्रतिबद्धता।
7. आदर्श समय-सारणी।
8. प्रारम्भिक शिक्षा एवं प्रधानाचार्य प्रशिक्षण।

उद्‌घाटन के पश्चात् श्री आरावकर जी ने गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि पुस्तकें छात्रों की अभिरुचि, उनके क्रिया-कलाप एवं आयु को ध्यान में रखकर बनायी जाएँ। वस्तुतः पुस्तकें अध्यापक केन्द्रित नहीं, बल्कि बालकेन्द्रित होनी चाहिए। पुस्तक के अन्दर निहित की जाने वाली विषय-वस्तु के साथ जुड़ने वाले महापुरुषों में भारतीय महापुरुषों को स्थान देना चाहिए। पुस्तक समीक्षा सत्र में उभरते हुए प्रश्न सामने आए। जैसे- हमारे प्रकाशन विषयानुसार अधिक पुस्तकों का प्रकाशन क्यों कर रहे हैं? बस्ते का बोझ कम करने में प्रकाशनों की भूमिक क्या है आदि।

भाषा विशेषज्ञ श्रीमती शर्मिष्ठा परवेशकुमार पटेल ने कहा- सभी छात्रों को पढ़ना, लिखना, समझना और अभिव्यक्त करना आना चाहिए। Teaching skill LSRW अर्थात् Listening, Speaking, Reading & Writing का अनुपालन करना चाहिए। शब्द-कोष में वृद्धि करते हुए भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने बताया कि शिक्षण व्यावहारिक बने, इस दृष्टि से गुजरात प्रान्त में 100 खेलों की एक पुस्तिका भी तैयार की गई है। भाषा के क्रमिक विकास हेतु डॉ. मधुश्री संजीवसाव जी को नवीन खेल-पुस्तिका तथा भाषा शिक्षण संदर्शिका निर्माण का कार्य श्री अशोक पॉण्डा, श्रीमती शर्मिष्ठा, परवेशकुमार पटेल एवं श्री रामकिशोर श्रीवास्तव को सौंपा गया। श्री अशोक पॉण्डा ने कहा कि प्रत्येक कक्षा स्तर पर भाषानुसार शब्दकोष (डिक्शनरी) की उपलब्धता विद्यालयों की ओर से कराई जाये, जिससे छात्र कठिन शब्दों को सहज भाव से खोज सकें। श्री खगेश्वरदास (सह-संयोजक) ने अपना विचार रखते हुए कहा कि आचार्यों के प्रशिक्षण वर्गों का तारतम्य बनाया जाए। प्रतिभागियों का पुनश्च प्रतिभाग हो, उनके अनुवर्ती प्रयासों का मूल्यांकन और प्राप्त हो रहे श्रेष्ठ परिणामों हेतु उनका प्रोत्साहन किया जाए। प्रधानाचार्य व प्रबन्ध-समिति की ओर से प्रयोगधर्मी आचार्यों को प्रयोग करने की स्वतन्त्रता दी जाए।

प्रान्त संगठन मंत्री श्री सदाशिव उपाले ने कहा कि पुस्तकालय में पुस्तकें मँगवाई जा सकती है, किन्तु स्वाध्याय की प्रेरणा तो आचार्य और प्रधानाचार्य ही देंगे। आधारभूत विषय-विशेषज्ञ श्री दुर्गसिंह राजपुरोहित ने कहा कि आधारभूत विषय छात्रों के पंचकोषीय विकास के लिए है। इनके लिए स्वतंत्र कालांशों की व्यवस्था की जाने पर बल दिया। प्रत्येक विद्यालय में खेलों की समुचित व्यवस्था बने, स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क का आधार होता है। अतः आधारभूत विषयों का अन्य विषयों के साथ इनके सहसम्बन्ध पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

प्रान्त संगठन मंत्री श्री शैलेष श्रीराम जोशी ने सहायक साम्रगी निर्माण एवं प्रयोग सम्बन्धी समस्याओं के निवारण हेतु कार्यशाला आयोजन की प्राथमिकता पर अपने विचार रखे।

बहिन सुश्री प्रमिला शर्मा ने शिक्षण में जीवन-मूल्यों की प्रतिबद्धता व छात्रों से भावात्मक लगाव पर तथ्यात्मक विचार प्रस्तुत किए। समापन में बहिन मधुश्री संजीवसाव ने शिशुवाटिका, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसंस्कृति के साथ पंचकोषीय विकास की संकल्पना की ओर सभी का ध्यान

आकृष्ट किया। उन्होंने छात्रों की मूल वृत्तियों का शैक्षिक प्रयोग करने के कई प्रयोग बताए। जैसे- पुष्प क्रियाकलाप के अन्तर्गत National Flowers Country Maps में लगाना। अन्त में श्री आरावकार जी ने कहा कि हम सभी नए-नए प्रयोगों को अपने ध्यान में लायें। नवीन खेलों की रचना रचें। लगभग 200 खेलों की संग्रह पुस्तिक तैयार करें। इस अवसर पर उन्होंने RITAM APP के महत्त्व को बताते हुए इस एप को अपने क्षेत्रों में सभी से डाउनलोड कराने का आग्रह किया। इस संगोष्ठी में अपेक्षित कार्यकर्ता 17 में से 15 की उपस्थिति रही। क्षेत्र प्रमुखों द्वारा कार्यकारिणी बैठक सितम्बर 2019 से पूर्व अपने-अपने क्षेत्र में 5 चयनित विद्यालयों का अवलोकन करना तय किया गया।

**श्री रामकिशोर श्रीवास्तव** (रा. संयो., प्रारम्भिक शिक्षा)

## पूर्व छात्र परिषद विद्याभारती महाकोशल प्रान्त

# सरस्वती स्कूल आज भी मेरे हृदय में बसता है....

"आज मैं न्यूयार्क में बार्कलेस में मैनेजिंग डायरेक्टर के पद पर हूँ और केवल ठीक-ठाक अंग्रेजी बोलता हूँ पर मेरे अधीनस्थ कई अंग्रेज हैं तथ्य यह है कि ज्ञान का अंग्रेजी बोलने से कोई संबंध नहीं है इसका प्रमाण आपके सामने है। इस स्कूल से शिक्षा प्राप्त कई हस्तियां हैं जो देश-विदेश में विशिष्ट स्थानों पर हमें गौरवान्वित कर रही हैं।" जी हाँ यह लेख विद्याभारती के पूर्व छात्र श्री पंकज खंडेलवाल जी द्वारा अपने विद्यालय एवं गुरुजनों हेतु लिखित यह आत्मीय पत्र....

मेरे सम्मानीय गुरूजनों एवं प्यारे भैया बहनों,

मुझे इस बात की खुशी है कि आज मेरे विद्यालय का स्वर्ण जयंती स्थापना वर्ष हर्षोल्लास के साथ बहुत बड़े स्तर पर मनाया जा रहा है। बहुत कम ऐसे संस्थान हैं जो अपने पूर्व छात्रों को ऐसे अवसर पर याद कर सम्मानित करते हैं। इस अभिनव पहल पर बहुत-बहुत बधाई। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि इस भव्य समारोह में मैं भी सम्मिलित होता लेकिन अपरिहार्य कारणों से ऐसा न हो सका, इसका मुझे हमेशा दुख रहेगा।

सरस्वती स्कूल का पहला दिन मेरे जीवन की अमिट छाप है जिसने मुझे अंदर से मजबूत बनाया। भैया-बहिनों के लिए संदेश यह है कि अपने आप पर विश्वास रखें किसी भी परिस्थिति में घबरायें नहीं और किसी भी चैलेंज को फुल कान्फीडेंस से सामना करें।

कई शिक्षा संस्थानों में मैने अध्ययन किया है किन्तु "सरस्वती स्कूल मेरे हृदय में बसता है।" शिक्षा संस्कृति और संस्कार का ऐसा अनूठा संगम और कहीं देखने को नहीं मिलता। कम से कम प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा तो ऐसे संस्थान में होनी चाहिए क्योंकि जो अपरिपक्व मन पर छाप पड़ती है वह जीवन पर्यन्त रहती है। यहाँ अमेरिका में हम जितने भारतीय हैं वह सामूहिक रूप से सभी राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्यौहार जैसे- राखी, होली, दीपावली, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि धूमधाम से मनाते हैं। इतना ही नहीं यहाँ कई ऐसे स्कूल भी संचालित हैं जो हर रविवार को हिन्दी पढ़ाते हैं और हमारी संस्कृति की जानकारी देते हैं। निहित संदेश यह है कि संस्कृति और संस्कारों को कभी न भूलें चाहे कितनी भी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचैंध दुनिया में आपको रहना पड़े। आप को जानकर खुशी होगी कि हमारे बच्चे घर के छोटे से मंदिर के सामने खड़े होकर शयन पूर्व गायत्री मंत्र का पाठ करते हैं। घर में तुलसी का पौधा और छोटा सा मंदिर भी है, बच्चों को घर में हिन्दी बोलना अनिवार्य है।

अंग्रेजी माध्यम और धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलने वालों से प्रतिस्पर्धा हो तो घबरायें नहीं। वास्तविक ज्ञान आपके पास है।

मेरे भैया-बहिनों के लिए एक संदेश और देना चाहता हूँ, पढ़ाई के साथ खेलकूद पर भी ध्यान दें तभी सर्वांगीण विकास होगा। आप क्लास रूम में मस्ती न कर ध्यान से पढ़ें। इससे आपको विषय को समझने में कम समय लगेगा और बचे समय में आप खेल सकते हैं।

अंत में सभी आयोजन कर्ताओं, गुरूजनों का वंदन, भैया-बहिनों को प्यार और मकर संक्राति पर सभी को शुभकामनाएँ।

भुलाना और भूल जाना वहम है दिल का, भला कौन निकलता है दिल से, एक बार बस जाने के बाद।। सरस्वती स्कूल ऐसा ही है मेरे जहन में...

पंकज खंडेलवाल (मैनेजिंग डायरेक्टर बार्कलेस न्यूयार्क)
सरस्वती शिशु मंदिर कटनी छात्र 1992 बैच

# Bharatiya Family System : A Unique Contribution to Humanity

Family system is the precious contribution of our society to the humanity. Due to its uniqueness, Hindu family functions as the basic unit which connects individual to the nation taking the journey towards 'VASUDHAIVA KUTUMBAKAM'. Along with being a complete system of social and economic security, family also is the important medium of inculcating 'SAMSKARS' and imparting values in the new generation. The multi-centred character of the Hindu society is the main reason for its eternal existence and the family system is one of the effective and important centres.

These days, our family system that epitomises the sacred cultural heritage seems to be disintegrating. The principle reasons for the breakup of the family system are the increasing influence of materialist mindset and self-centeredness. Due to the materialistic thinking, the problems of self-centered and acrid behavior, unchecked desires and greed, stress, divorce etc are on the rise. Today our joint families are turning into nuclear ones. The tendency to keep children in hostels at the very young age is growing. Due to the absence of emotional security of the family, the feeling of loneliness is growing in the young generation. As a result, drug addiction, violence, heinous crimes and suicides are reaching alarming levels. Growing numbers of old age homes, in the absence of the social security of the family, is worrisome.

The Akhil Bharatiya Pratinidhi Sabha of Rashtriya Swayamsevak Sangh, passed a resolution on 'Bharatiya Family System: A Unique Contribution to humanity' in its three day meet at Kedardham in Gwalior, Madhya Pradesh, said the Sah Sarkaryavah, Shri Dattatreya Hosabale in a press conference.

The resolution titled 'Bharatiya Family System: A Unique Contribution to humanity' said, "The ABPS is of the firm opinion that there is a need for comprehensive and immense efforts to sustain the lively and value-based nature of our family system. Through our day to day behavior and conduct, we should ensure that our family life works for building character, enriching life-values and strengthening mutual relationships. The family life will be joyous and blissful through dining, praying, celebrating festivals and going on pilgrimage together, the use of mother tongue, insistence on Swadeshi and, nourishing and protecting family and social traditions. Family and Society are complimentary to each other. To instill the sense of social responsibility, encouraging donations for social, religious and educational cause and readiness to help the needy as per ability should become the nature of our family."

The mother is the pivot in our family system. Habit to respect 'MATRISHAKTI' should be inculcated in each and every family member. Collective decision making should be the norm in our family. Duties rather than rights should become the focus of discussion in the family. The rights of others are protected in discharging of one's own duties.

"With the passage of time, some distortions and rigidity have crept in our society. Ill-practices like dowry, untouchability and discrimination, ostentatious and extravagant spending, superstitions etc are creating obstacles in the all round development of the society. The ABPS calls upon the entire society, starting from our own families, to make efforts in uprooting these evils and shortcomings and work towards establishing a value based and harmonious society," the resolution said.

Revered saints and, social, religious, educational and intellectual organisations have always played an important role in the social development. Pratinidhi Sabha urges them to take into account the seriousness of the situation and make every possible effort to strengthen the family institution.

It further added, "Those who are forced to stay in nuclear families due to the circumstantial compulsions should keep their contacts alive with the ancestral family and spend some time with them collectively on regular intervals. To remain connected with the ancestral place is like connecting with the roots. Therefore, activities like being there together as a family, undertaking some service projects etc. should be undertaken. Elementary education of children should be conducted in the local environment to nurture family and social bonds. Organising community festivals and programs in our residential area can be useful to cultivate the sense of larger families. Initiating activities like Baal-Gokulam and Samskaar-Varg for young and adolescent children will also be useful for their balanced development."

**VISWA SAMVAD KENDRA, BHARAT**

# विद्या भारती पंजाब ने किया तीसरा एन. आर. आई. सम्मेलन

श्री गुरु रविदास जी के 642 वें प्रकाशोत्सव को समर्पित इस वर्ष के सर्वहितकारी एन. आर. आई. का सम्मेलन का आयोजन दिनांक 23 फरवरी 2019 को स्थानीय गुरू गोविन्द सिंह एवेन्यू जालंधर स्थित विद्याधाम के विशाल प्रांगण में किया गया। सम्मेलन में ग्राम विकास को समर्पित एन. आर. आई. राष्ट्रसेवी सर्वश्री सुरिन्दर सिंह निज्जर, रिक्खी राम धवन, सुदर्शन कुमार बख्शी, दिनेश शर्मा, जसबीर सिंह, एस. पी. सिंह ओबराय, डॉ. अमरजीत सिंह मारवा को सर्वहितकारी सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मेलन में भाग लेने वाले 150 अनिवासी पंजाबी भारतीय को सहभागिता प्रमाण पत्र भेंट किया गया।

सम्मेलन के उद्घाटन में सम्बोधित करते हुए श्री बनवीर जी ने विद्या भारती के क्रियाकलापों की जानकारी देते हुए विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीयों के अभिभावकों को उनके पीछे आने वाली मुश्किलों पर भी चिन्तन किया। उन्होंने कहा कि अनिवासी भारतीय बन्धु नि:संदेह अपने देश और गृह प्रदेश के प्रति स्नेह स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में समाज सेवा कर रहे हैं लेकिन राष्ट्र की संस्कृति के संरक्षण पर भी चिन्ता करनी होगी। उन्होंने अप्रवासी भारतीयों के राष्ट्र निर्माण में योगदान की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री विजय सांपला ने कहा कि श्री गुरू रविदास जी के समानता के सिद्धान्त का पर्यायवाची सर्वहितकारी है और समिति अपने नाम के अनुरूप वर्ग जाति भेद से ऊपर उठकर देश के सभी नागरिकों के हित में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही है। समारोह की अध्यक्षा एवं एन. आर. आई. कमीशन पंजाब की सचिव दमनप्रीत कौर (पी.सी.एस.) किसी कारणवश समारोह में न पहुँच पाने के कारण उन्होंने चंडीगढ़ से ही वीडियो कांफ्रेन्सिंग के माध्यम से समारोह को संबोधित किया।

यूरोप, अमेरिका, कनाडा, मध्यपूर्व एवं एशियाई देशों के पंजाबी अनिवासी भारतीयों ने इस सत्र के मुख्य अतिथि लोक सभा के पूर्व डिप्टी स्पीकर तथा पंजाब विधान सभा के पूर्व स्पीकर चरनजीत सिंह अटवाल रहे, जबकि मुख्य वक्ता विद्या भारती के रा. मंत्री श्री शिवकुमार जी रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए श्री शिवकुमार जी ने कहा कि विद्या भारती सरकार आधारित शिक्षा की अपेक्षा समाज आधारित शिक्षा के अभियान को चला रही है। समाज आधारित शिक्षा ही इस राष्ट्र को सुसंस्कारित शिक्षा मुहैया करा सकती है। श्री चरनजीत अटवाल ने समिति के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि देश में शिक्षा की उपलब्धता के समान साधन यदि सरकार मुहैया करवाए तो समाज में किसी भी तरह का अंतर नहीं बचेगा।

सम्मेलन में सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब के द्वारा की जा रही शिक्षा सेवा की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए ''सर्व द नेशन थ्रू एजुकेशन'' से जुड़ने का संकल्प लिया और ''एडॉप्ट टू एजुकेशन'' प्रकल्प में सहयोग भी दिया। उन्होंने कहा कि देश के विशेषत: ग्रामीण एवं दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षण संस्थान स्थापित करना अपने आप में अद्भूत एवं अविस्मरणीय है।

## भारत सरकार के समाचार पत्रों के पंजीयन कार्यालय से सम्बंधित फार्म-4 ( नियम 8 के अंतर्गत जानकारी )

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थल | : प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरुनगर, नई दिल्ली - 110065 |
| 2. | पंजीयन क्रमांक, प्रकाशन अवधि | : DELBIL/2005/15122, मासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम | : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी |
| 4. | क्या भारत के नागरिक हैं? | : हाँ |
| 5. | मुद्रक का पता | : प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरुनगर, नई दिल्ली - 110065 |
| 6. | प्रकाशक का नाम | : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी |
| 7. | क्या भारत के नागरिक हैं? | : हाँ |
| 8. | प्रकाशक का पता | : प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरुनगर, नई दिल्ली - 110065 |
| 9. | सम्पादक का नाम | : डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी |
| 10. | क्या भारत के नागरिक हैं? | : हाँ |
| 11. | सम्पादक का पता | : प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरुनगर, नई दिल्ली - 110065 |
| 12. | उन व्यक्तियों या ट्रस्ट, सोसायटी का नाम व पता जो समाचार पत्र या पत्रिका के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। | : प्रज्ञा सदन, जी.एल.टी. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, महात्मा गाँधी मार्ग, नेहरुनगर, नई दिल्ली - 110065 |

मैं डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार यह विवरण सत्य है।

**डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी,** प्रकाशक, विद्या भारती संकुल संवाद, मासिक पत्रिका

विद्याभारती संकुल संवाद
Date of publishing : 20 March, 2019
Total No. of Pages : 8

RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21
Date of Posting -24-25 March, 2019

# संस्कृत विश्व को दिशा व दशा देने वाली भाषा है - डॉ. पवन तिवारी

## अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षा गोष्ठी

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, संस्कृत लेखन प्रतियोगिताओं एवं छात्रों में संस्कृत के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए विद्या भारती की दो दिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षा गोष्ठी का आयोजन दिनांक 23 से 24 फरवरी 2019 को सरस्वती शिक्षा परिषद् के नरसिंह सभागार में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन महाकौशल प्रांत के संगठन मंत्री डॉ. पवन तिवारी द्वारा किया गया। गोष्ठी में पवन तिवारी ने कहा कि संस्कृत पढ़ने वाला ही समाज को सही दिशा व दशा प्रदान करता है। संस्कृत में समाज के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। सृष्टि के आरंभ से ही विज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ है। हमारे वेद, उपनिषद् और पुराण आदि ग्रंथ विज्ञान के स्रोत हैं। संस्कृत विश्व को दिशा व दशा देने वाली भाषा है, हमारे भारतवर्ष में संस्कृत को देवभाषा की मान्यता है।

संस्कृत शिक्षा के अखिल भारतीय संयोजक श्री विजय गणेश कुलकर्णी ने कहा कि संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा है और संस्कृत में निहित ज्ञान-विज्ञान प्रामाणिक ज्ञान है। किसी भाषा की समृद्धि का इस बात से पता चलता है कि उसे कितने लोग बोलते हैं, बल्कि इस बात से पता चलता है कि वह भाषा साहित्य और विज्ञान के मामले में कितनी समृद्ध है। आधुनिक शिक्षा त्वरित व तकनीकी माध्यम पर आधारित हो गई है। हमें भी शिक्षा के क्षेत्र में सभी पहलुओं पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। संस्कृत शिक्षण को भी इसी के अनुरूप बनाना चाहिए। संस्कृत को संस्कृत भाषा के माध्यम से ही पढ़ाना चाहिए। छात्रों में संस्कृत शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ाने के लिए संस्कृत को सरल एवं लोकप्रिय पाठ्यक्रम सामग्री से युक्त किया जाना चाहिए। इन बिन्दुओं पर आज हमें चिन्ता करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर श्री विजय गणेश कुलकर्णी अ. भा. संस्कृत शिक्षा संयोजक, श्री धीरेन्द्र झा अ. भा. विषय प्रमुख, श्री रविशंकर शुक्ल सहित देश के विभिन्न प्रांतों से संस्कृत शिक्षा के विषय प्रमुख उपस्थित रहे।

**प्रवीण तिवारी**
मीडिया प्रभारी महाकौशल

# एक प्रयोग जो पूर्व प्रधानाचार्य जी ने किया...

राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मेला 2018 (कटक) के समापन सत्र में पुरस्कार वितरण का समय और हर्ष-विषाद का वातावरण, इसमें पुरस्कारों की घोषणा से पहले श्री रामप्रसाद स्वामी (अ. भा. संयोजक राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मेला) ने कहा कि सभी को लगता है कि मैं प्रथम स्थान पर रहूँगा, मेरा स्थान तो लगेगा ही, ऐसा लगना भी चाहिए किन्तु प्रथम तो कोई एक ही रहने वाला है।

इसमें ऐसे भैया/बहिन भी होंगे जो अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर रहते हैं? वे खड़े हो जायें।

ठीक है, लगभग 50 भैया/बहिन ऐसे हैं। अच्छी बात है। आप लोग बैठिए।

हमारी कक्षा में हमें ज्ञात होता है कि रमेश प्रथम आने वाला है और वह प्रथम आता है तब हम दुखी नहीं होते क्योंकि हम पहले से इन परिणाम के बारे में जानते हैं।

यहाँ ज्ञान-विज्ञान मेले में आप अपने विद्यालय, संकुल, जिला, संभाग, प्रांत, क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए पहुँचे हैं तब प्रथम स्थान पर मैं रहूँगा, की मन:स्थिति बनना स्वाभविक है, किन्तु इसी प्रकार आप सभी प्रथम हैं।

अब आप सभी में से किसी एक को ही प्रथम आना है, वह कौन होगा आप नहीं जानते।

निर्णायकों के लिए ऐसी स्पर्धा में निर्णय करना चुनौतीभरा होता है किन्तु निर्धारित बिन्दुओं के आधार पर निर्णय होता है और प्रथम, द्वितीय, तृतीय का चयन किया जाता है।

आप सभी ने परिश्रम किया है, सभी श्रेष्ठ हैं।

अब मैं पुरस्कारों की घोषणा करता हूँ, जिनका स्थान लगे उन्हें बधाई, जिनका स्थान न लगे उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं। भविष्य में अवसर आपको भी प्राप्त हो सकता है, परिश्रम करते रहें।

इस प्रयोग से-

1. यह ज्ञात हुआ कि प्रतिभागी भैया/बहिनों में लगभग 50 की संख्या ऐसी है जो अपनी कक्षा में प्रथम आते हैं। अत: ज्ञान-विज्ञान मेला तथा इसी प्रकार की अन्य गतिविधियाँ ज्ञानार्जन एवं भैया/बहिनों की प्रगति में सहायक हैं, न कि बाधक।
2. पुरस्कार वितरण के समय जो अनावश्यक तनाव रहता है, वह इस मनोवैज्ञानिक प्रयोग से कम हुआ।
3. श्री रामप्रसाद स्वामी गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र से सेवा-निवृत्त प्राचार्य हैं। अत: उनके लम्बे अनुभव का लाभ पुरस्कार वितरण के समय किया गया। यह प्रयोग एक नवाचार या क्रियाशोध की तरह ही प्रतीत हुआ।

इसीलिए कहा गया है कि जहाँ न जावे रवि वहाँ जावे कवि और इनसे आगे जो जावे, वह है अनुभवी।

**देवेन्द्रराव देशमुख,** अ.भ.वैदिक गणित प्रमुख

सेवा में

**प्रकाशक एवं मुद्रक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, महामंत्री, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065, के लिए हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रेस, ए-26, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित। **संपादक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, फोन : 011-29840013